International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-5746; Impact Factor: RJIF 5.34
Received: 15-08-2020; Accepted: 30-08-2020; Published: 16-09-2020
www.alleducationjournal.com
Volume 5; Issue 5; 2020; Page No. 39-41

कोविड–19 का धार्मिक पर्यटन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययनः हरिद्वार महाकुम्भ 2021 के विशेष सन्दर्भ में

प्रखर सिंह पाल [1], आशीष कुमार [2], अजय भारद्वाज [3]
[1-3] व्याख्याता, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उत्तराखंड, भारत

सारांश
COVID–19 (कोरोनावायरस) दिन–प्रतिदिन के जीवन को प्रभावित कर रहा है और वैश्विक अर्थव्यवस्था को धीमा कर रहा है। वर्तमान में दैनिक जीवन में COVID–19 के प्रभाव व्यापक हैं और इसके दूरगामी परिणाम हैं। इन्हें विभिन्न श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है जैसे – हेल्थकेयर, आर्थिक, सामाजिक और पर्यटन आदि। कुंभ मेले की उत्पत्ति और ऐतिहासिकता चर्चा का विषय रही है। कुंभमेले को दुनिया का सबसे बड़ा तीर्थ एवं धार्मिक आयोजन माना जाता है। यह एक ऐसा मेला है जहाँ पर्यटक, श्रृद्धालु, साधु–संत आदि यहाँ एकत्रित होते हैं। हरिद्वार में यह मेला पौष मास की पूर्णिमा से प्रारंभ होता है। यह मेला प्रत्येक चौथे वर्ष में मनाया जाता है। यह शोध कार्य कोविड – 19 का धार्मिक पर्यटन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन – हरिद्वार महाकुम्भ 2021 के विशेष सन्दर्भ में किया गया है जिसका उद्देश्य वर्तमान परिस्थितियों में आने वाले कुम्भ मेले के संदर्भ में भावी चुनौतियों एवं उसके समाधान हेतु किया गया है।

मूल शब्दः अर्थव्यवस्था, COVID–19, हरिद्वार, महाकुम्भ

प्रस्तावना
भारत में कुंभ मेला दुनिया का सबसे बड़ा सामूहिक समागम है, जिसने 2013 में लगभग 100 मिलियन आगंतुकों को देखा था। इस प्रकार के आयोजन विभिन्न चुनौतियों को प्रस्तुत करते है। जनसंख्या घनत्व में वृद्धि, हाइजेनिक स्थितियों में कमी और पर्यावरण प्रदूषकों के संपर्क में रोगजनकों के आसान संचरण का मार्ग प्रशस्त होता है। महामारी की संभावना के कारण, प्राथमिक ध्यान संभावित जोखिम कारकों की पहचान करने और उचित निवारक उपायों को लागू करने पर होना चाहिए। तीर्थयात्रियों के धर्म और मनोविज्ञान का संदर्भ भी जोखिम कारकों के विकास के साथ निकटता से जुड़ा हुआ है और इसलिए चर्चा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। हम मौजूदा और संभावित जोखिम कारकों के विवरण के साथ कुंभ मेले को एक संक्षिप्त पृष्ठभूमि प्रदान करते हैं, जिस पर हमारा ध्यान देने की आवश्यकता है। भारत एक विकासशील राष्ट्र है जो वर्तमान समय में एक भयंकर महामारी से जूझ रहा है जिसका नाम है – कोरोना।

धार्मिक पर्यटनः पर्यटन अर्थात् घूमना फिरना मानव की एक स्वभाविक प्रवत्ति है मानव द्वारा विभिन्न उद्देश्यों से पर्यटन किया जाता है पर्यटन द्वारा जहाँ हमें आनंद की अनुभूति होती है वही विभिन्न प्रकार की जानकारियाँ भी प्राप्त होती है भारत में अनेक धर्मो को मानने वाले लोग निवास करते है यहाँ जाती धर्म भोगोलिक और भाषाई भिन्नता पाई जाती है भारतीय संस्कृति में धर्म को सर्वाधिक महत्ता प्रदान की गई है धर्म पूण रूप से आध्यात्मिक नैतिक और सामाजिक सामंजस्य है भारत में हिन्दू धर्म से सम्बंधित धार्मिक स्थलों की संख्या काफी अधिक है ये समस्त देश में जगह जगह बने हुए हुए है धार्मिक स्थलों के साथ विभिन्न मान्यताये आस्था और विश्वास जुड़े हुए है धार्मिक स्थलों की यात्रा करना धर्म की दृष्टी से महत्वपूर्ण माना जाता है प्राचीन काल से ही धार्मिक पर्यटन किया जाता है भारत में धार्मिक पर्यटन की दृष्टी से अनेक ऐसे धार्मिक स्थल है जहाँ पहुंचकर आनंद महसूस करते है सभी धर्मो के मानने वाले लोगो द्वारा धार्मिक पर्यटन किया जाता है।

धार्मिक पर्यटन, जिसे आमतौर पर विश्वास पर्यटन के रूप में भी जाना जाता है, एक प्रकार का पर्यटन है, जहां लोग तीर्थयात्रा, मिशनरी, या अवकाश (फैलोशिप) उद्देश्यों के लिए व्यक्तिगत रूप से या समूहों में यात्रा करते हैं। दुनिया में सबसे बड़ा सामूहिक धार्मिक पर्यटन भारत में कुंभ मेला तीर्थयात्रा में होता है, जो 100 मिलियन से अधिक तीर्थयात्रियों को आकर्षित करता है।

हरिद्वार महाकुम्भः कुम्भ मेला हिन्दू धर्म का एक महत्त्वपूर्ण पर्व है। कुम्भ मेला भारत में सिर्फ परम्परा मात्र एक मेले के रूप में नहीं , बल्कि उत्सव के रूप में भी मनाया जाता है।यह एक ऐसा प्रसिद्ध मेला है , जहाँ लोग श्रद्धालु के रूप में गंगा नदी में डुबकी लगाते हुए नजर आते है।यह एक ऐसा पर्व है जो हिन्दू धर्म के सबसे महत्वपूर्ण पर्व में से एक है । कुम्भ मेला सिर्फ पौराणिक इतिहास के साथ पर्व स्थलों के कारण भी काफी प्रसिद्ध है।कुम्भ मेले के सम्बन्ध में अनेक पौराणिक एवम् लोक प्रचलित कथाएँ है , लेकिन सबसे पुरानी एवम् मान्यतानुसार सही कही जाने वाली कथा "समुन्द्र मंथन" से जुडी है।कुम्भ का संस्कृत में अर्थ है दृ "कलश" , ज्योतिष शास्त्र में कुम्भ राशि का भी यही चिन्ह है।

हिन्दू धर्म में कुम्भ का पर्व हर 12 वर्ष के अंतराल पर चारो स्थानों में से किसी एक पवित्र नदी के तट पर मनाया जाता है। हरिद्वार में गंगा , उज्जैन में शिप्रा, नासिक में गोदावरी और इलाहाबाद में गंगा,यमुना और सरस्वती मिलती है। पौराणिक कथा के अनुसार अनन्त जीवन अमृत को पाने के लिए देवताओं और राक्षसों के बीच युद्ध के दौरान कुछ बूंद चार स्थानों पर गिर गए थे जिन्हें आज प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक के रूप में जाना जाता है । यह माना जाता है कि इन बूंदों ने इन चार स्थानों को रहस्यमय शक्तियां दी हैं , चार शक्तियों में से प्रत्येक में "कुंभ मेला" मनाया जाता है। हर 3 सालों में सामान्य कुंभ मेला का आयोजन होता है और हर छह वर्ष में हरिद्वार और इलाहाबाद (प्रयाग) में अर्ध (आधा) कुंभ मेला आयोजित होता है , जबकि हर 12 वर्ष में पूर्ण (कुंभ मेला) पूर्ण स्थान पर प्रयाग (इलाहाबाद) , हरिद्वार, उज्जैन, और नासिक, ग्रहों के आधार पर आयोजित होता है । महाकुंभ मेला प्रयाग में 144 साल बाद (12 'पूर्ण कुंभ मेला') के बाद मनाया जाता है । उस अवधि के आधार पर सूर्य, चंद्रमा और बृहस्पति विभिन्न राशि चिन्हों में शामिल होने

पर कुंभ मेले का आयोजन किया जाता है । मेले की सटीक तारीख के बारे में पता करने के लिए "हिदू कैलेंडर" और "राशियों" की सहायता लेने पड़ती है।

कुम्भ मेला का महत्व

कुम्भ मेला पौष मास की पूर्णिमा से प्रारंभ होता है एवम् यह मेला प्रत्येक चौथे वर्ष नासिक, इलाहाबाद, उज्जैन, और हरिद्वार में बारी–बारी से मनाया जाता है। प्रयाग कुम्भ विशेष महत्व रखता है।प्रयाग कुम्भ का विशेष महत्व इसलिए है क्योंकि यह 12 वर्षो के बाद गंगा, यमुना एवं सरस्वती के संगम पर आयोजित किया जाता है। हरिद्वार में कुम्भ मेला गंगा के तट पर और नासिक में गोदावरी के तट पर आयोजित किया जाता है। इस अवसर पर नदियों के किनारे भव्य मेले का आयोजन किया जाता है,जिसमें बड़ी संख्या में तीर्थ यात्री आते हैं। कुंभ पर्व का शाही स्नान बड़ा ही रोचक, पुण्यकारी व दर्शनीय होता है।

हरिद्वार में आयोजित होने वाले कुम्भ मेले के अल्वा प्रसिद्ध मंदिरों "दक्ष महादेव मंदिर", "भारत माता मंदिर" , "मनसा देवी मंदिर" और "चंडी देवी मंदिर" के भी दर्शन कर सकते है और पवित्र घाट "हर कि पौड़ी" हरिद्वार का मुख्य स्थान है।

हरिद्वार में कुम्भ मेले का आयोजन

हरिद्वार हिन्दुओ के लिए एक प्रमुख तीर्थस्थान है, मेले की तिथि जानने के लिए सूर्य , चन्द्र और ब्रहस्पति की स्थिति कि आवश्यकता होती है। हरिद्वार का सम्बन्ध मेष राशि से है कुंभ योग के विषय में विष्णु पुराण में उल्लेख मिलता है। विष्णु पुराण में बताया गया है कि जब गुरु कुंभ राशि में होता है और सूर्य मेष राशि में प्रवेश करता है तब हरिद्वार में कुंभ लगता है। 1986, 1998, 2010 के बाद अब अगला महाकुंभ मेला हरिद्वार में 2021 में लगेगा।

कोविड–19

कोरोना वाइरस

कोरोना वाइरस का संबंध वाइरस के ऐसे परिवार से है जिसके संक्रमण से जुकाम से लेकर साँस लेने में तकलीफ जैसी समस्या हो सकती है इस वाइरस को पहले कभी नहीं देखा गया है इस वाइरस का संक्रमण दिसम्बर में चीन के वुहान में शुरू हुआ था **डब्लूएचओ** के मुताबिक बुखार, जुकाम, साँस लेने में तकलीफ,इसके लक्षण है अब तक इस वाइरस को फैलने से रोकने वाला कोई टीका नहीं बना है।

क्या है इस बीमारी के लक्षण

इसके लक्षण फ्लू से मिलते जुलते है संक्रमण के फलस्वरूप बुखार,जुकाम,साँस लेने में तकलीफ,नाक का बहना और गले में खराश जैसी समस्या उत्पन्न होती है यह वाइरस एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैलता है इसीलिए इसे लेकर बहुत सावधानी बरती जा रही है कुछ मामलो में कोरोना वाइरस घातक भी हो सकता है खासतौर पर अधिक उम्र के लोग और जिन्हें पहले से अस्थमा,डायबिटीज,और हार्ट की बीमारी है उनमे ये जल्दी फैलता है

यह कैसे फैलता है

रोकथाम

कोविड–19 का धार्मिक पर्यटन पर प्रभाव

हरिद्वार महाकुम्भ 2021 चुनौतियां

अन्य धार्मिक आयोजन की तरह, कुंभ मेला एक बड़े पैमाने पर आयोजित किया जाता है, विभिन्न अनुष्ठानों, कार्यक्रमों और प्रथाओं का समागम एक साथ होता है। कुंभ मेले में भाग लेने वाले लोगों की बड़ी संख्या इसकी योजना और प्रबंधन को स्थानीय सरकार के लिए एक महत्वपूर्ण कार्य बनाती है, जो इस आयोजन के लिए जिम्मेदार है।

स्थानीय समस्याएँ

महाकुम्भ को लेकर दिन प्रतिदिन समस्याएँ और भी गम्भीर होते जा रही है। सामाजिक संगठन, आध्यात्मिक संस्थायें तथा स्थानीय प्रशासन सभी इन समस्याओं को लेकर चिंतित है। यह समस्याएँ निम्न वर्गो में समझी जा सकती है:–

1. निर्माणाधीन पुल	**6. गंगा को गंदगी से बचाना**
2. निर्माणाधीन सड़क	7. आवास व्यवस्था
3. घाटों का सौन्दर्यीकरण	8ण नगर विकास
4. भीड़ का नियंत्रण	9. पानी की आपूर्ति
5. वाहनों का नियंत्रण	10. बिजली

हरिद्वार महाकुम्भ 2021 समाधान

1. निर्माणाधीन पुल एवं निर्माणाधीन सड़कः– सरकार द्वारा निर्माणाधीन पुल एवं निर्माणाधीन सड़क का कार्य प्रगति पर है जिसको फरवरी 2021 तक पूर्ण हो जाना चाहिए लेकिन इस आपदा को देखते हुए यह कार्य पूर्ण होना दुष्कर लगता है। सरकार को इसके लिए जनसहयोग एवं स्थानीय लोगों, कर्मियों, मजदूरों से कार्य लेकर यह परियोजना कराई जानी चाहिए।
2. घाटों का सौन्दर्यीकरण एवं गंगा को गंदगी से बचाना :– सरकार द्वारा पत्येक कुम्भ मेंलें के अवसर पर घाटों का सौंदर्यीकरण किया जाता रहा है किन्तु इस आपदा के कारण यह कार्य भी पूर्ण होना कठिन लगता है लेकिन इस कार्य को पूर्ण करने के लिए सरकार को विभिन्न प्रकार की सामाजिक संस्थाओं, स्थानीय लोगों, कर्मियों की सहायता लेकर इसे पूर्ण किया जा सकता है। घाटों का सौंदर्यीकरण करने के लिए घाटों के आसपास छायादार वृक्ष लगाना चाहिए तथा इसके साथ–साथ सरकार को साफ हुई गंगा को बचाने के लिए भी लोगों को जागरूक एवं प्रेरित करना चाहिए।
3. भीड़ एवं वाहनों का नियंत्रण :– भीड़ एवं वाहनों के नियंत्रण

के लिये हमें आर्टिफिशियल ऐंटिलीजेंश तकनीक का प्रयोग करना चाहिए जिससे कम समय में भीड़ एवं वाहनों का नियंत्रण किया जा सके। इस समय कोरोना महामारी को देखते हुए श्रृद्धालुओं को यहाँ आने से रोकने के लिए ज्यादा से ज्यादा जागरूकता कार्य{म चलाने चाहिए जिससे यहाँ कम भीड़ हो।

4. आवास व्यवस्था एवं नगर विकास :– हरिद्वार एक ऐसा तीर्थ स्थान है जहाँ रहने एवं भोजन की सीमित व्यवस्था है। ऐसे में प्रशासन को इस महामारी को देखते हुए इस बार टेंट व्यवस्था न करके हरिद्वार में उपलब्ध होटल, धर्मशालाए, लॉज एवं होम स्टे आदि जैसे विकल्पों की सहायता लेनी चाहिए।
5. पानी की आपूर्ति एवं बिजली :– कुम्भ में आने वाले यात्रीयों हेतु जल एवं बिजली की उचित व्यवस्था होनी चाहिए जिससे कुम्भ यात्रीयों को किसी भी प्रकार की समस्या न हो।

उपसंहार

यह अध्ययन बताता है कि कोविड 19 जैसी संक्रामक महामारी के दौरान कैसे कुंभ मेले से संबंधित पर्यटन एवं सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के लिए विभिन्न उपरोक्त बिन्दुओ पर ध्यान केंद्रित करने के लिए सामाजिक प्रणाली का उपयोग किया जा सकता है। यह अध्ययन हरिद्वार शहर पर केंद्रित है, जो त्योहार की मेजबानी करने वाले चार भारतीय शहरों में से एक है। इस शोध पत्र में विभिन्न दृष्टिकोणों के बारे में चर्चा की गई है जिसके माध्यम से हरिद्वार शहर में आने और जाने वाले तीर्थ यात्रियों के सुरक्षात्मक कुंभ अनुभव को बढ़ा सकते हैं। कैसे तीर्थयात्रियों को सुरक्षा प्रदान करने के लिए भू–स्थानिक दृष्टिकोण का उपयोग किया जा सकता है, जिसे भविष्य के विकास की योजना में माना जाना चाहिए। इस अध्ययन में प्रस्तावित दृष्टिकोण को कुंभ मेले के अन्य मेजबान शहरों द्वारा अपनाया जा सकता है जो अंततः भारतीय पर्यटन एवं सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने में मदद करेगा।

सन्दर्भ सूची

1. कुमार आएए पाण्डेय म., – काबिया ए. क. (2018). भारत में आध्यात्मिक पर्यटनके परिप्रेक्ष्य में यज्ञ की भूमिका, महत्व एवं संभावनाएं. Interdisciplinary Journal of Yagya Research, 1(2), 01 - 06. https://doi.org/10.36018/ijyr.v1i2.9
2. कपूर बिमल कुमार (2009) ''धार्मिक एवं सांस्कृतिक पर्यटन स्थल'' डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस प्राईवेट लिमिटेड नई दिल्ली 124–140
3. शर्मा देवेश (2010) ''धार्मिक पर्यटन'' मोहित बुक्स इन्टरनेशनल, नई दिल्ली 99–103
4. डेविड, एस, और रॉय, एन (2016) पृथ्वी पर सबसे बड़े मानव जन सभा से सार्वजनिक स्वास्थ्य संबंधी दृष्टिकोणः कुंभ मेला, भारत, संक्रामक रोगों के इंटरनेशनल जर्नल, 47, 42–45।
5. श्रीधर, एस, गौरेट, पी, और ब्रोक्वी, पी (2015) कुंभ मेले की व्यापक समीक्षाः संक्रामक रोगों के प्रसार के जोखिमों की पहचान करना। नैदानिक सूक्ष्म जीव विज्ञान और संक्रमण, 21 (2), 128–133।
6. हलीम, ए, जावेद, एम, और वैश्य, आर (2020) दैनिक जीवन में ब्ट्प्क 19 महामारी के प्रभाव। वर्तमान चिकित्सा अनुसंधान और अभ्यास।
7. Kumar A, Bhardwaj A, Indolia U. Addressing the effect of COVID19 pandemic on the Tourism Industry in Haridwar and Dehradun Districts of Uttarakhand, India. Dev Sanskriti Interdisciplinary International Journal, 2020; 16:48-55. https://doi.org/10.36018/dsiij.v16i.163
8. Kumar A, Bhardwaj A. Duties & Rights: Crux for Sustainable Business in Hospitality & Tourism. Vidyawarta International Research Journal. 2017; 17(20):115-118.
9. David S, Roy N. Public health perspectives from the biggest human mass gathering on earth: Kumbh Mela, India. International Journal of Infectious Diseases. 2016; 47:42-45.
10. Haleem A, Javaid M, Vaishya R. Effects of COVID 19 pandemic in daily life. Current Medicine Research and Practice, 2020.
11. Porwal P, Kumar A, Indoliya U, Parashar A. Role of Ashtang Yoga In Health Tourism – Characteristics And Prospects. Dev Sanskriti Interdisciplinary International Journal. 2018; 11:23-28. https://doi.org/10.36018/dsiij.v11i.129
12. Shxa K, Khare R. A Geospatial Approach to Conserving Cultural Heritage Tourism at Kumbh Mela Events in India. In Tourism, Cultural Heritage and Urban Regeneration Springer, Cham, 2020, 125-140.
13. Sridhar S, Gautret P, Brouqui P. A comprehensive review of the Kumbh Mela: identifying risks for spread of infectious diseases. Clinical microbiology and Infection. 2015; 21(2):128-133.